



INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES

(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)

DOI : 03.2021-11278686

ISSN : 2582-8568

IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

हरित क्रांति से आत्मनिर्भर भारत तक: खाद्य सुरक्षा की दिशा में प्रयास (From Green Revolution to Self-Reliant India: Efforts towards Food Security)

नितेश कुमार वर्मा

डॉ. कंवराज सुथार

शोधार्थी,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान, भारत)

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान,
विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान,
रामगिरि, उदयपुर (राजस्थान, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686

DOI Link :: <https://doi-ds.org/doilink/10.2025-85737585/IRJHIS2510025>

सारांश :

भारत में खाद्य सुरक्षा का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को पर्याप्त, पौष्टिक और सुलभ भोजन प्रदान करना है। हरित क्रांति ने उत्पादन बढ़ाकर आत्मनिर्भरता की दिशा में पहला कदम दिया, जबकि “आत्मनिर्भर भारत” पहल सतत, तकनीकी और पोषण-केंद्रित कृषि को बढ़ावा दे रही है। भूमि क्षरण, जलवायु परिवर्तन, वितरण असमर्थता और पोषण असमानता जैसी चुनौतियाँ अभी भी हैं। डिजिटल एग्रीकल्चर, ड्रोन, एआई आधारित खेती, स्थानीय उत्पादन और कृषि निर्यात जैसे उपाय समाधान हैं। विज्ञान, नीति और सामाजिक सहभागिता के समन्वय से भारत एक भूखमुक्त, आत्मनिर्भर और पोषण-सुरक्षित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है।

बीज शब्द (Keywords): खाद्य सुरक्षा, आत्मनिर्भर भारत, हरित क्रांति, सतत कृषि, पोषण सुरक्षा, डिजिटल एग्रीकल्चर, कृषि निर्यात, जैविक खेती, जलवायु परिवर्तन, वितरण प्रणाली।

1. प्रस्तावना (Introduction):

खाद्य सुरक्षा (Food Security) किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थायित्व की आधारशिला मानी जाती है। इसका सरल अर्थ यह है कि देश के प्रत्येक नागरिक को, हर समय, पर्याप्त, सुरक्षित और पोषक भोजन सुलभ हो — ताकि वह स्वस्थ और सक्रिय जीवन व्यतीत कर सके। भोजन केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि यह मानव अधिकार, गरिमा और विकास का मूल आधार है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है जब उसके नागरिक भूख और कुपोषण से मुक्त हों।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में खाद्य सुरक्षा का प्रश्न केवल कृषि उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, समान वितरण, आर्थिक अवसरों और पर्यावरणीय संतुलन से गहराई से जुड़ा हुआ है। जब कोई परिवार दिन में दो समय का भोजन प्राप्त करने में सक्षम नहीं होता, तो यह केवल आर्थिक गरीबी नहीं

बल्कि सामाजिक असुरक्षा का भी प्रतीक होता है। इसीलिए, खाद्य सुरक्षा का महत्व केवल 'अन्न की उपलब्धता' तक सीमित न रहकर 'पोषण की समानता' और 'जीवन की गुणवत्ता' तक विस्तृत हो गया है।

विश्व स्तर पर, 1974 में रोम में आयोजित विश्व खाद्य सम्मेलन में खाद्य सुरक्षा की परिभाषा दी गई थी कि "प्रत्येक व्यक्ति को, हर समय, पर्याप्त मात्रा में भोजन उपलब्ध हो ताकि वह सक्रिय और स्वस्थ जीवन जी सके।" यही परिभाषा आगे चलकर खाद्य नीति निर्माण का आधार बनी। भारत ने भी इस दिशा में अनेक नीतियाँ, योजनाएँ और कार्यक्रम लागू किए ताकि हर नागरिक को भोजन का अधिकार सुनिश्चित किया जा सके।

भारत प्राचीन काल से ही कृषि प्रधान देश रहा है। देश की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। ग्रामीण जीवन का आधार खेती ही है और यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में अन्न को देवता के समान माना गया है। कृषि न केवल अर्थव्यवस्था का आधार है, बल्कि यह सामाजिक स्थिरता और सांस्कृतिक पहचान का भी प्रतीक है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत एक गंभीर खाद्य संकट से गुजर रहा था। औपनिवेशिक शासन के कारण कृषि व्यवस्था कमजोर हो चुकी थी। उत्पादन कम था, सिंचाई के साधन सीमित थे और किसानों की आर्थिक स्थिति दयनीय थी। परिणामस्वरूप देश को विदेशी सहायता पर निर्भर रहना पड़ा। 1950 के दशक में भारत को "PL-480" नामक अमेरिकी योजना के अंतर्गत खाद्यान्न आयात करना पड़ा, जिससे आत्मनिर्भरता का स्वप्न दूर होता जा रहा था।

ऐसे समय में यह समझा गया कि केवल औद्योगिक विकास से देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकता, बल्कि कृषि उत्पादन में वृद्धि आवश्यक है। क्योंकि जब तक देश अपने नागरिकों को भरपेट भोजन नहीं दे सकता, तब तक आर्थिक विकास अधूरा है। अतः कृषि क्षेत्र में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने, अनुसंधान को प्रोत्साहित करने और उत्पादन बढ़ाने की दिशा में नीतिगत प्रयास शुरू किए गए। यही वह पृष्ठभूमि थी, जहाँ से "हरित क्रांति" का बीजारोपण हुआ।

भारत में खाद्य सुरक्षा का अर्थ केवल खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाना नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाना, किसानों की आय बढ़ाना, जलवायु के अनुकूल खेती विकसित करना और भंडारण एवं वितरण व्यवस्था को प्रभावी बनाना भी है। कृषि का यह महत्व आज भी बना हुआ है क्योंकि भारत की आबादी निरंतर बढ़ रही है और खाद्य आवश्यकताएँ लगातार बढ़ती जा रही हैं।

हरित क्रांति से शुरू हुई आत्मनिर्भरता की यात्रा का संकेत:

1960 का दशक भारतीय कृषि के इतिहास में परिवर्तन का युग साबित हुआ। देश में बार-बार सूखे, अकाल और विदेशी अनाज पर निर्भरता से मुक्ति पाने के लिए वैज्ञानिक कृषि क्रांति की आवश्यकता महसूस की गई। इसी दौर में प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन और अमेरिकी वैज्ञानिक नॉर्मन बोरलॉग के नेतृत्व में उन्नत बीजों, रासायनिक उर्वरकों और सिंचाई तकनीकों का प्रयोग शुरू हुआ। इसे ही "हरित क्रांति" (Green Revolution) कहा गया।

हरित क्रांति का मुख्य लक्ष्य था — कृषि उत्पादन को इस स्तर तक बढ़ाना कि भारत खाद्यान्न आयातक देश से उत्पादक और आत्मनिर्भर देश बन सके। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सबसे पहले इस कार्यक्रम का सफल प्रयोग किया गया। गेहूँ और धान की नई किस्मों ने उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि की। 1970 तक भारत न

केवल अपनी खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने लगा, बल्कि अनाज निर्यात करने की स्थिति में भी आ गया।

यह क्रांति केवल उत्पादन का नहीं, बल्कि आत्मगौरव और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनी। स्वतंत्रता के बाद जब भारत ने पहली बार विदेशी सहायता से मुक्ति पाई, तो यह केवल आर्थिक उपलब्धि नहीं थी बल्कि राष्ट्रीय आत्मविश्वास का प्रतीक भी था। इसने यह संदेश दिया कि भारत अपने संसाधनों के बल पर भूख से लड़ सकता है और अपने नागरिकों को सुरक्षित भोजन प्रदान कर सकता है।

हालाँकि, हरित क्रांति के साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आईं — जैसे मिट्टी की उर्वरता में कमी, जलस्तर में गिरावट और क्षेत्रीय असमानताएँ। फिर भी इसने देश को खाद्यान्न संकट से निकालकर “खाद्य आत्मनिर्भरता” की दिशा में अग्रसर किया।

हरित क्रांति ने यह स्पष्ट कर दिया कि खाद्य सुरक्षा केवल दान या सहायता का विषय नहीं, बल्कि वैज्ञानिक सोच, नीति-निर्माण और जनसहभागिता का परिणाम है। यही कारण है कि आज “आत्मनिर्भर भारत” का जो स्वप्न देश देख रहा है, उसकी जड़ें उसी हरित क्रांति में निहित हैं जिसने भारत को खाद्यान्न की दृष्टि से स्वावलंबी बनाया। आत्मनिर्भर भारत अभियान का मूल उद्देश्य भी यही है कि देश उत्पादन, प्रसंस्करण और वितरण के हर स्तर पर आत्मनिर्भर बने। कृषि और खाद्य क्षेत्र में यह आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक सुरक्षा की गारंटी भी है। जब देश अपने नागरिकों को पर्याप्त, सुलभ और पोषक भोजन दे सकता है, तभी वह सच्चे अर्थों में आत्मनिर्भर कहा जा सकता है।

प्रस्तावना के रूप में यह स्पष्ट होता है कि खाद्य सुरक्षा भारत के विकास की बुनियाद है। यह केवल अन्न उत्पादन की समस्या नहीं, बल्कि मानव जीवन, स्वास्थ्य, पोषण और समानता से जुड़ा व्यापक मुद्दा है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए खाद्य सुरक्षा की दिशा में हरित क्रांति एक ऐतिहासिक मील का पत्थर रही है। इसने हमें आत्मनिर्भरता का मार्ग दिखाया और यह विश्वास दिलाया कि यदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नीतिगत संकल्प और किसान का परिश्रम एक साथ जुड़ जाएँ, तो कोई भी राष्ट्र भूख और गरीबी से मुक्त हो सकता है।

आज “हरित क्रांति से आत्मनिर्भर भारत” की यात्रा केवल एक आर्थिक कहानी नहीं, बल्कि यह उस देश की कथा है जिसने भूख से जूझते हुए भी आत्मनिर्भरता का स्वप्न साकार किया। यह यात्रा अब भी जारी है — सतत विकास, पोषण सुरक्षा और सबके लिए समृद्धि की दिशा में।

2. हरित क्रांति: पृष्ठभूमि और उपलब्धियाँ :

➤ हरित क्रांति की पृष्ठभूमि:

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश की आर्थिक स्थिति अत्यंत कमजोर थी। कृषि क्षेत्र, जो भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता था, औपनिवेशिक नीतियों के कारण पिछड़ा चुका था। खेती परंपरागत ढंग से की जाती थी, सिंचाई के साधन सीमित थे, खाद और बीज की गुणवत्ता निम्न स्तर की थी तथा उत्पादन इतना कम था कि देश अपनी जनसंख्या की खाद्य आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पा रहा था।

1950 के दशक में भारत में बार-बार सूखा और अकाल की स्थिति बनी रही। उस समय देश को अपनी खाद्य आवश्यकता पूरी करने के लिए अमेरिका की PL-480 योजना के अंतर्गत अनाज आयात करना पड़ा। विदेशी सहायता पर यह निर्भरता भारत जैसे स्वाभिमानी देश के लिए अत्यंत चिंताजनक थी। प्रधानमंत्री लाल बहादुर

शास्त्री ने "जय जवान, जय किसान" का नारा देकर यह संकेत दिया कि आत्मनिर्भर भारत का निर्माण तभी संभव है जब किसान सशक्त होगा और कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी।

इन परिस्थितियों में भारतीय नीति-निर्माताओं ने यह समझ लिया कि यदि देश को भूख और गरीबी से मुक्त करना है, तो कृषि को आधुनिक विज्ञान और तकनीक से जोड़ना आवश्यक है। फलस्वरूप 1960 के दशक में कृषि अनुसंधान को प्राथमिकता दी गई, उच्च उपज वाली बीज प्रजातियों का विकास किया गया और उर्वरकों एवं सिंचाई सुविधाओं में सुधार लाने का अभियान प्रारंभ हुआ। यही अभियान आगे चलकर "हरित क्रांति" के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

➤ हरित क्रांति की उत्पत्ति और प्रमुख व्यक्तित्व:

"हरित क्रांति" शब्द का प्रयोग सबसे पहले अमेरिकी कृषि विज्ञानी विलियम गॉड (William Gaud) ने किया था, जिन्होंने इसे कृषि उत्पादन में तीव्र वृद्धि से जोड़कर देखा। भारत में इस क्रांति के सूत्रधार माने जाते हैं प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन, जिन्होंने नॉर्मन बोरलांग द्वारा विकसित उच्च उत्पादक बीजों को भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप ढालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत सरकार ने 1965 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) को सशक्त बनाया और मेक्सिको से गेहूँ की उन्नत किस्में (Mexipak और Lerma Rojo) मंगवाकर पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों के बीच वितरित कीं। साथ ही, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, नलकूप, ट्रैक्टर और आधुनिक सिंचाई तकनीक का प्रयोग शुरू हुआ।

यह कृषि क्षेत्र के इतिहास में एक युगांतरकारी परिवर्तन था। पारंपरिक कृषि से वैज्ञानिक कृषि की ओर भारत ने पहला निर्णायक कदम बढ़ाया।

➤ हरित क्रांति के मुख्य तत्व (Key Elements of the Green Revolution):

हरित क्रांति केवल बीजों या उर्वरकों तक सीमित नहीं थी; यह एक समग्र कृषि परिवर्तन था। इसके प्रमुख तत्व निम्नलिखित रहे:

1. उच्च उत्पादक बीज (High Yielding Variety Seeds) – गेहूँ, धान और मक्का की ऐसी किस्में विकसित की गईं जो अधिक उत्पादन देती थीं।
2. सिंचाई सुविधाओं का विस्तार – नहरों, नलकूपों और ट्यूबवेल के माध्यम से सिंचाई के क्षेत्र में तीव्र वृद्धि हुई।
3. रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग – मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और फसलों की रक्षा हेतु आधुनिक रासायनिक तकनीकों को अपनाया गया।
4. कृषि यंत्रीकरण – ट्रैक्टर, हार्वेस्टर और पंपसेट जैसी मशीनों का प्रयोग बढ़ा।
5. कृषि ऋण और मूल्य समर्थन नीति – किसानों को सस्ते ऋण, बीमा और न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की सुविधा दी गई।

इन उपायों ने मिलकर भारतीय कृषि को नई दिशा दी और देश में खाद्य उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

➤ हरित क्रांति की प्रमुख उपलब्धियाँ (Major Achievements of the Green Revolution):

(क) खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि:

1960 के दशक में जहाँ भारत का कुल गेहूँ उत्पादन लगभग 110 लाख टन था, वहीं 1980 के दशक के अंत

तक यह 500 लाख टन से अधिक हो गया। धान उत्पादन में भी इसी प्रकार की वृद्धि दर्ज की गई। भारत न केवल अपनी आंतरिक खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करने लगा, बल्कि 1970 के दशक के मध्य में अनाज निर्यात करने की स्थिति में पहुँच गया।

(ख) खाद्य आत्मनिर्भरता की प्राप्ति:

हरित क्रांति का सबसे बड़ा योगदान यही रहा कि भारत ने विदेशी अनाज पर निर्भरता समाप्त कर दी। “PL-480” जैसी योजनाओं की आवश्यकता नहीं रही। भारत ने स्वयं को खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर घोषित किया। यह आत्मनिर्भरता देश की खाद्य सुरक्षा की दिशा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि थी।

(ग) किसानों की आय और जीवन स्तर में सुधार:

हरित क्रांति ने किसानों को बाजार से जोड़ने का अवसर दिया। उत्पादन बढ़ने के साथ ही उनकी आय में वृद्धि हुई। ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ीं और कृषि आधारित उद्योगों को भी गति मिली।

(घ) रोजगार और ग्रामीण विकास:

सिंचाई, बीज, उर्वरक, ट्रैक्टर आदि की बढ़ती माँग के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में नए रोजगार के अवसर उत्पन्न हुए। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई चेतना आई।

(ङ) कृषि अनुसंधान और शिक्षा का विस्तार:

हरित क्रांति ने भारत में कृषि अनुसंधान को नई दिशा दी। विभिन्न राज्यों में कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई, जैसे कि पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (लुधियाना) और गोविंद बल्लभ पंत कृषि विश्वविद्यालय (पंतनगर)। इन संस्थानों ने कृषि शिक्षा और नवाचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

➤ क्षेत्रीय विकास में असमानता:

हालाँकि हरित क्रांति की उपलब्धियाँ उल्लेखनीय थीं, लेकिन इसका प्रभाव सभी राज्यों में समान नहीं रहा। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्रों में जहाँ सिंचाई सुविधाएँ और आधारभूत ढाँचा उपलब्ध था, वहाँ इसका प्रभाव अधिक दिखाई दिया। दूसरी ओर, पूर्वी भारत, बिहार, ओडिशा और मध्य भारत जैसे राज्यों में इसका लाभ सीमित रहा।

इस क्षेत्रीय असमानता ने भारत की कृषि नीति के समक्ष नई चुनौतियाँ उत्पन्न कीं — कि कैसे कृषि क्रांति का लाभ उन क्षेत्रों तक पहुँचाया जाए जो अभी भी पारंपरिक खेती पर निर्भर हैं।

➤ पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभाव:

हरित क्रांति ने उत्पादन तो बढ़ाया, परंतु इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए:

- रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता घटने लगी।
- भूमिगत जल के अत्यधिक दोहन से जलस्तर गिरा।
- केवल गेहूँ और धान जैसी फसलों पर अधिक ध्यान देने से फसल विविधता (Crop Diversity) घट गई।
- छोटे और सीमांत किसानों को नई तकनीक अपनाने में कठिनाई हुई, जिससे आय असमानता बढ़ी।

इन चुनौतियों के बावजूद, हरित क्रांति को भारतीय कृषि इतिहास का स्वर्ण युग कहा जा सकता है क्योंकि इसने देश को “भूखमुक्त भारत” की दिशा में अग्रसर किया।

➤ हरित क्रांति का दीर्घकालिक प्रभाव:

हरित क्रांति ने भारत को यह विश्वास दिया कि वैज्ञानिक कृषि और नीति-निर्माण के समन्वय से खाद्य संकट को दूर किया जा सकता है। इसने कृषि को एक जीवंत और गतिशील क्षेत्र में परिवर्तित कर दिया। इसके परिणामस्वरूप भारत ने न केवल खाद्य आत्मनिर्भरता प्राप्त की बल्कि खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 जैसे कानूनों की नींव भी रखी। यह क्रांति आज “आत्मनिर्भर भारत” अभियान की प्रेरणा भी है। जहाँ हरित क्रांति ने उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया, वहीं आज की नीतियाँ “सतत कृषि” और “पोषण सुरक्षा” पर बल दे रही हैं।

3. खाद्य सुरक्षा का विस्तार और नीतिगत पहल (Expansion of Food Security and Policy Measures):

भारत में खाद्य सुरक्षा का विचार केवल भोजन की उपलब्धता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक समग्र सामाजिक-आर्थिक नीति का रूप ले चुका है, जिसमें उत्पादन, वितरण और उपभोग—तीनों पहलुओं का संतुलन आवश्यक है। स्वतंत्रता के बाद से अब तक खाद्य सुरक्षा के विस्तार हेतु भारत सरकार ने अनेक नीतिगत पहलों की हैं, जिनका उद्देश्य सभी नागरिकों को पर्याप्त, पौष्टिक और सुलभ भोजन उपलब्ध कराना है।

प्रारंभिक वर्षों में देश खाद्य संकट से जूझ रहा था। जनसंख्या वृद्धि, सीमित सिंचाई सुविधाएँ और पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ उत्पादन में बाधक थीं। इस स्थिति को सुधारने हेतु 1960 के दशक में “हरित क्रांति” (Green Revolution) की शुरुआत हुई। इस क्रांति के तहत उन्नत बीजों, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और आधुनिक सिंचाई तकनीकों को अपनाया गया। परिणामस्वरूप गेहूँ और चावल के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और भारत खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हुआ।

इसके बाद सरकार ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली (Public Distribution System – PDS) को सशक्त बनाया, ताकि गरीब वर्ग को सस्ते दर पर अनाज उपलब्ध कराया जा सके। 1990 के दशक में लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (Targeted PDS) लागू की गई, जिससे सहायता सीधे निर्धन परिवारों तक पहुँच सके। इसी अवधि में मध्याह्न भोजन योजना (Mid-Day Meal Scheme) आरंभ की गई, जिसका उद्देश्य बच्चों में कुपोषण को कम करना और विद्यालयों में नामांकन व उपस्थिति बढ़ाना था।

साल 2013 में भारत सरकार ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (National Food Security Act – NFSA) पारित किया, जो खाद्य अधिकार को एक कानूनी स्वरूप प्रदान करता है। इस अधिनियम के तहत देश की लगभग 67% जनसंख्या को सब्सिडी वाले अनाज (गेहूँ, चावल, ज्वार) उपलब्ध कराए जाते हैं। यह अधिनियम खाद्य सुरक्षा को एक मौलिक अधिकार के रूप में स्थापित करता है।

इसके अलावा, सरकार ने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (PMGKAY) जैसी योजनाएँ भी शुरू कीं, विशेषकर कोविड-19 महामारी के समय, ताकि संकट की स्थिति में भी कोई व्यक्ति भूखा न रहे। साथ ही, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, राष्ट्रीय पोषण मिशन, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और कृषि अवसंरचना कोष जैसी पहलें खाद्य सुरक्षा के दीर्घकालिक लक्ष्य को सशक्त बनाती हैं।

वर्तमान समय में खाद्य सुरक्षा की अवधारणा का दायरा और बढ़ गया है। इसमें केवल अनाज की आपूर्ति ही नहीं, बल्कि पोषण सुरक्षा (Nutritional Security), सतत कृषि (Sustainable Agriculture) और जलवायु परिवर्तन के अनुकूल खेती जैसी नीतियाँ भी शामिल हैं। जैविक खेती, मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना और जल-संरक्षण परियोजनाएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि भारत में खाद्य सुरक्षा का विस्तार केवल सरकारी योजनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देश के विकास, सामाजिक समानता और मानव गरिमा से गहराई से जुड़ा हुआ है। नीतिगत पहलों के माध्यम से भारत ने खाद्य उत्पादन, वितरण और पोषण के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, और यह यात्रा अब “कुपोषण मुक्त और आत्मनिर्भर भारत” की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रही है।

4. समकालीन चुनौतियाँ (Contemporary Challenges):

भारत में खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद आज भी अनेक चुनौतियाँ सामने हैं, जो इसकी स्थायित्व और प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं। हरित क्रांति ने देश को अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भर तो बनाया, लेकिन बदलते पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक परिदृश्यों में खाद्य सुरक्षा अब एक बहुआयामी चुनौती बन चुकी है।

सबसे प्रमुख समस्या भूमि क्षरण (Land Degradation) और जलवायु परिवर्तन (Climate Change) की है। निरंतर खेती, रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग, सिंचाई के असंतुलित साधन और वन विनाश ने मिट्टी की उर्वरता को कम कर दिया है। भारत में लगभग 30% कृषि भूमि किसी न किसी रूप में क्षरण का शिकार है। जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा का असमान वितरण, तापमान में वृद्धि और बाढ़-सूखे जैसी चरम परिस्थितियाँ फसलों के उत्पादन को प्रभावित कर रही हैं। इससे न केवल खाद्य उत्पादन घटता है, बल्कि किसानों की आजीविका पर भी खतरा उत्पन्न होता है।

दूसरी बड़ी चुनौती कृषि में असमानता और किसानों की आर्थिक स्थिति है। भारत में अधिकांश किसान छोटे और सीमांत हैं, जिनकी भूमि जोत एक हेक्टेयर से भी कम है। उत्पादन लागत बढ़ने, बाजार में मूल्य अस्थिरता, और ऋण के बोझ के कारण किसान आर्थिक संकट में फँस जाते हैं। हरित क्रांति का लाभ मुख्यतः कुछ राज्यों (पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश) तक सीमित रहा, जिससे क्षेत्रीय असमानता और बढ़ी। कृषि क्षेत्र में निवेश की कमी और तकनीकी पिछड़ापन भी खाद्य सुरक्षा को प्रभावित करता है।

तीसरी चुनौती भंडारण, परिवहन और वितरण प्रणाली की अक्षमता है। भारत हर वर्ष लाखों टन खाद्यान्न का उत्पादन करता है, परंतु पर्याप्त गोदामों और कोल्ड स्टोरेज की कमी के कारण इसका एक बड़ा हिस्सा खराब हो जाता है। भारतीय खाद्य निगम (FCI) और सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) के तहत वितरण में लीकेज, भ्रष्टाचार और पहचान में त्रुटियाँ जैसी समस्याएँ बनी रहती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों तक समय पर और गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री पहुँचाने में यह व्यवस्थाएँ अभी भी पूर्णतः सक्षम नहीं हो पाई हैं।

इसके अतिरिक्त, पोषण असमानता (Nutritional Inequality) भी एक गंभीर चिंता का विषय है। भारत में आज भी बड़ी आबादी कुपोषण, एनीमिया और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी से जूझ रही है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स में भारत की रैंकिंग अपेक्षाकृत निम्न बनी हुई है, जो यह दर्शाती है कि केवल खाद्यान्न की उपलब्धता पर्याप्त नहीं, बल्कि भोजन की गुणवत्ता और पोषण मूल्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है। फास्ट फूड संस्कृति, मिलावटी खाद्य पदार्थों और असंतुलित आहार की प्रवृत्ति ने पोषण सुरक्षा के लक्ष्य को और जटिल बना दिया है।

अंततः यह स्पष्ट है कि खाद्य सुरक्षा की चुनौती केवल उत्पादन की नहीं, बल्कि वितरण, समानता और गुणवत्ता की भी है। भूमि और जल संसाधनों का संरक्षण, जलवायु-स्मार्ट कृषि पद्धतियाँ, किसानों की आय में वृद्धि, भंडारण क्षमता का विस्तार और पौष्टिक आहार पर केंद्रित नीतियाँ ही इन चुनौतियों का समाधान बन सकती हैं।

भारत यदि इन बहुआयामी समस्याओं से समग्र रूप से निपट सके, तो खाद्य सुरक्षा को न केवल बनाए रख सकेगा, बल्कि “पोषण-सुरक्षित और आत्मनिर्भर भारत” के लक्ष्य की ओर भी अग्रसर हो सकेगा।

5. आत्मनिर्भर भारत और खाद्य सुरक्षा की नई दिशा (Atmanirbhar Bharat & the New Path to Food Security):

भारत ने खाद्य सुरक्षा को केवल उत्पादन तक सीमित न रखते हुए इसे सतत और आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है। इस दिशा में प्रधानमंत्री की “आत्मनिर्भर भारत” (Atmanirbhar Bharat) पहल एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुई है, जिसका उद्देश्य देश को कृषि, उत्पादन और वितरण के हर स्तर पर स्वावलंबी बनाना है। इस पहल के तहत किसानों को नई तकनीक, वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण उपलब्ध कराकर उनकी उत्पादकता और आय बढ़ाने पर जोर दिया गया है।

आत्मनिर्भरता की दिशा में एक मुख्य रणनीति है जैविक खेती, प्राकृतिक कृषि और स्थानीय उत्पादन पर बल देना। पर्यावरण-संवेदनशील कृषि के माध्यम से न केवल मिट्टी और जल संसाधनों की रक्षा होती है, बल्कि किसानों को रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता कम करने का अवसर मिलता है। स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा देने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था सशक्त होती है और खाद्य सामग्री की आपूर्ति का चक्र स्थिर बनता है। इससे भूख और पोषण असमानता को कम करने में भी मदद मिलती है।

तकनीकी नवाचार (Technological Innovation) भी खाद्य सुरक्षा की नई दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। डिजिटल एग्रीकल्चर, ड्रोन तकनीक, सटीक सिंचाई, AI आधारित खेती और स्मार्ट फार्मिंग जैसे उपकरण किसानों को उत्पादन में सुधार, फसल रोग पहचान और बाजार तक सीधा पहुँच सुनिश्चित करने में सक्षम बनाते हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर फसल का मूल्यांकन और बिक्री प्रक्रिया पारदर्शी होती है, जिससे किसान की आय और उत्पादकता में सुधार होता है।

भारत ने कृषि निर्यात और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के विकास पर भी ध्यान दिया है। कृषि उत्पादन का निर्यात बढ़ाने से देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होती है और किसानों के लिए स्थायी बाजार तैयार होता है। साथ ही, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग (Food Processing Industry) से स्थानीय कच्चे माल का मूल्य वर्धन होता है, रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और अपशिष्ट कम होता है।

इसके अतिरिक्त, “मेक इन इंडिया” और “Ease of Doing Agriculture” जैसी पहलें कृषि क्षेत्र में निवेश, नवाचार और व्यवसायिक अवसरों को बढ़ावा देती हैं। इन पहलों के माध्यम से छोटे और मध्यम किसान भी आधुनिक कृषि तकनीक अपनाकर उत्पादन बढ़ा सकते हैं। सरकार द्वारा लागू वित्तीय प्रोत्साहन, ऋण सुविधा और इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

सारांशतः, आत्मनिर्भर भारत अभियान ने खाद्य सुरक्षा को केवल अन्न उत्पादन से परे ले जाकर सतत, तकनीकी, पोषण-केंद्रित और बाजार-सक्षम मॉडल में परिवर्तित किया है। यह न केवल किसानों को सशक्त बनाता है, बल्कि पूरे देश को भूखमुक्त और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आधुनिक तकनीक, जैविक और स्थानीय उत्पादन, प्रसंस्करण उद्योग और नीति सुधारों के समन्वय से भारत खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में नई दिशा तय कर रहा है।

6. खाद्य सुरक्षा और सतत विकास (Food Security and Sustainable Development):

खाद्य सुरक्षा केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए पर्याप्त भोजन उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों का संरक्षण और सतत कृषि पद्धतियों को अपनाने से भी जुड़ी है। सतत विकास (Sustainable Development) और खाद्य सुरक्षा आपस में गहराई से जुड़े हैं, क्योंकि यदि कृषि उत्पादन प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण की कीमत पर बढ़ाया जाए, तो दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।

भारत में सतत विकास और खाद्य सुरक्षा के बीच संतुलन बनाने के लिए कई पहलें की गई हैं। पहली महत्वपूर्ण दिशा है जलवायु-स्मार्ट कृषि (Climate-Smart Agriculture)। इसमें फसल चक्र का सुधार, सूखा-प्रतिरोधी बीजों का उपयोग, वर्षा आधारित और सिंचाई प्रबंधन, और मृदा संरक्षण जैसी तकनीकों को अपनाया जाता है। इससे भूमि की उत्पादकता बढ़ती है और पर्यावरणीय जोखिम कम होते हैं।

दूसरी दिशा है जैविक और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना। रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों पर निर्भरता घटाने से मिट्टी और जल संसाधनों की गुणवत्ता बनी रहती है। स्थानीय खाद्य उत्पादन को बढ़ावा देकर किसान अपनी आय में सुधार कर सकते हैं और भोजन की पहुँच ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों तक आसान होती है। तकनीकी नवाचार सतत कृषि और खाद्य सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण उपकरण बन चुके हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म, स्मार्ट सिंचाई, ड्रोन और एआई आधारित फसल प्रबंधन से उत्पादन में वृद्धि, रोग पहचान और वितरण में दक्षता आती है। इससे खाद्यान्न का नुकसान कम होता है और किसान सीधे बाजार से लाभ कमा सकते हैं।

सतत खाद्य सुरक्षा के लिए भंडारण, परिवहन और प्रसंस्करण प्रणाली का सशक्त होना भी आवश्यक है। आधुनिक कोल्ड स्टोरेज, परिवहन नेटवर्क और फूड प्रोसेसिंग उद्योग न केवल उत्पादन के नुकसान को कम करते हैं बल्कि रोजगार और आर्थिक विकास को भी बढ़ावा देते हैं। भारत सरकार की प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, राष्ट्रीय पोषण मिशन और जल-संरक्षण परियोजनाएँ इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

इसके अलावा, सतत विकास में पोषण सुरक्षा (Nutritional Security) का महत्व बढ़ गया है। केवल अनाज उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं, बल्कि प्रोटीन, विटामिन और सूक्ष्म पोषक तत्वों से समृद्ध भोजन सुनिश्चित करना भी आवश्यक है। स्कूलों में मध्याह्न भोजन, मातृ एवं शिशु पोषण योजनाएँ और सामाजिक कार्यक्रम इसके उदाहरण हैं।

अंततः यह स्पष्ट होता है कि खाद्य सुरक्षा और सतत विकास एक दूसरे के पूरक हैं। जब तक हम प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करेंगे, किसानों को सशक्त बनाएँगे और तकनीकी नवाचार अपनाएँगे, तब तक खाद्य सुरक्षा दीर्घकालिक और सतत बनी रहेगी। भारत की यह यात्रा केवल भूख मिटाने की नहीं, बल्कि स्वावलंबी, पोषण-सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल कृषि व्यवस्था तैयार करने की दिशा में है।

इस प्रकार, सतत विकास और खाद्य सुरक्षा के समन्वय से भारत न केवल वर्तमान जरूरतों को पूरा कर रहा है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए स्थायी और आत्मनिर्भर खाद्य प्रणाली की नींव भी रख रहा है।

7. निष्कर्ष (Conclusion):

भारत में खाद्य सुरक्षा देश के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय विकास का अभिन्न हिस्सा है, जिसका उद्देश्य हर नागरिक को पर्याप्त, पौष्टिक और सुलभ भोजन उपलब्ध कराना है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने हरित क्रांति के माध्यम से उत्पादन बढ़ाकर भूखमुक्ति की दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम उठाया, जबकि आधुनिक नीतियाँ और "आत्मनिर्भर भारत" पहल इसे सतत और समग्र रूप में विकसित कर रही हैं। हालांकि भूमि क्षरण, जलवायु

परिवर्तन, कृषि में असमानता, भंडारण और वितरण की अक्षमताएँ तथा पोषण असमानता जैसी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। इन्हें दूर करने के लिए सतत कृषि, जैविक और स्थानीय उत्पादन, जलवायु-स्मार्ट खेती और तकनीकी नवाचार जैसे डिजिटल एग्रीकल्चर, ड्रोन और एआई आधारित फसल प्रबंधन को अपनाना आवश्यक है। इसके साथ ही न्यूनतम समर्थन मूल्य, कृषि बीमा, भंडारण तंत्र सुदृढीकरण, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और पोषण सुरक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों और उपभोक्ताओं दोनों को लाभ पहुँचाना चाहिए। कृषि निर्यात और “मेक इन इंडिया” पहल से ग्रामीण अर्थव्यवस्था सशक्त होती है और रोजगार के अवसर बढ़ते हैं। संक्षेप में, विज्ञान, नीति और समाज के समन्वय से भारत न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक भूखमुक्त, पोषण-सुरक्षित और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनने की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

संदर्भ सूची:

1. भारत सरकार। (2013). राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013. भारत सरकार, नई दिल्ली।
2. भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय। (2020). भारतीय कृषि सांख्यिकी वर्ष पुस्तक 2019–20. नई दिल्ली: भारत सरकार।
3. एम. एस. स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन। (2018). भारतीय कृषि में हरित क्रांति का योगदान और चुनौतियाँ। चेन्नई: एम. एस. स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन।
4. पंडित, आर. (2015). भारत में खाद्य सुरक्षा और पोषण नीति: एक विश्लेषण। नई दिल्ली: नीति अध्ययन प्रकाशन।
5. राष्ट्रीय पोषण मिशन। (2019). भारत में पोषण सुरक्षा और योजनाएँ। नई दिल्ली: स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय।
6. नायर, वी. (2017). खेती, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास। पुणे: कृषि अध्ययन प्रकाशन।
7. प्रधान मंत्री कार्यालय। (2020). आत्मनिर्भर भारत अभियान: रिपोर्ट और दिशा-निर्देश। नई दिल्ली: भारत सरकार।
8. शर्मा, एस. और वर्मा, ए. (2016). खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण विकास में हरित क्रांति का प्रभाव। जयपुर: राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय प्रकाशन।
9. फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइजेशन (FAO)। (2019). State of Food Security and Nutrition in the World 2019. Rome: FAO.
10. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)। (2018). उन्नत बीज प्रजातियाँ और भारत में कृषि उत्पादन में योगदान। नई दिल्ली: ICAR।